

एकादशः पाठः

## विचित्रः साक्षी

प्रस्तुत पाठ श्री ओमप्रकाश ठाकुर द्वारा रचित कथा का सम्पादित अंश है। यह कथा बंगला के प्रसिद्ध साहित्यकार बंकिमचन्द्र चटर्जी द्वारा न्यायाधीश-रूप में दिये गये फैसले पर आधारित है। सत्यासत्य के निर्णय हेतु न्यायाधीश कभी-कभी ऐसी युक्तियों का प्रयोग करते हैं जिससे साक्ष्य के अभाव में भी न्याय हो सके। इस कथा में भी विद्वान् न्यायाधीश ने ऐसी ही युक्ति का प्रयोग कर न्याय करने में सफलता पाई है। कश्चन निर्धनो जनः भूरि परिश्रम्य किञ्चिद् वित्तमुपार्जितवान्। तेन स्वपुत्रं एकस्मिन् महाविद्यालये प्रवेशं दापयितुं सफलो जातः। तत्तनयः तत्रैव छात्रावासे निवसन् अध्ययने संलग्नः समभूत्। एकदा स पिता तनूजस्य रुग्णतामाकर्ण्य व्याकुलो जातः पुत्रं द्रष्टुं च प्रस्थितः। परमर्थकार्श्येन पीडितः स बसयानं विहाय पदातिरेव प्राचलत्।

पदातिक्रमेण संचलन् सायं समयेऽप्यसौ गन्तव्याद् दूरे आसीत्। निशान्धकारे प्रसूते विजने प्रदेशे पदयात्रा न शुभावहा। एवं विचार्य स पार्श्वस्थिते ग्रामे रात्रिनिवासं कर्तुं कञ्चिद् गृहस्थमुपागतः। करुणापरो गृही तस्मै आश्रयं प्रायच्छत्।

विचित्रा दैवगतिः। तस्यामेव रात्रौ तस्मिन् गृहे कश्चन चौरः गृहाभ्यन्तरं प्रविष्टः। तत्र निहितामेकां मञ्जूषाम् आदाय पलायितः। चौरस्य पादध्वनिना प्रबुद्धोऽतिथिः चौरशङ्कया तमन्वधावत् अगृह्णाच्च, परं विचित्रमघटत। चौरः एव उच्चैः क्रोशितुमारभत “चौरोऽयं चौरोऽयम्” इति। तस्य तारस्वरेण प्रबुद्धाः ग्रामवासिनः स्वगृहाद् निष्क्रम्य तत्रागच्छन् वराकमतिथिमेव च चौरं मत्वाऽभर्त्सयन्। यद्यपि ग्रामस्य आरक्षी एव चौर आसीत्। तत्क्षणमेव रक्षापुरुषः तम् अतिथिं चौरोऽयम् इति प्रख्याप्य कारागृहे प्राक्षिपत्।

अग्रिमे दिने स आरक्षी चौर्याभियोगे तं न्यायालयं नीतवान्। न्यायाधीशो बंकिमचन्द्रः उभाभ्यां पृथक्-पृथक् विवरणं श्रुतवान्। सर्वं वृत्तमवगत्य स तं निर्दोषम् अमन्यत आरक्षिणं च दोषभाजनम्। किन्तु प्रमाणाभावात् स निर्णेतुं नाशक्नोत्। ततोऽसौ तौ अग्रिमे दिने उपस्थातुम् आदिष्टवान्। अन्येद्युः तौ न्यायालये स्व-स्व-पक्षं पुनः स्थापितवन्तौ। तदैव कश्चिद् तत्रत्यः कर्मचारी समागत्य न्यवेदयत् यत् इतः क्रोशद्वयान्तराले कश्चिज्जनः केनापि हतः। तस्य मृतशरीरं राजमार्गं निकषा वर्तते। आदिश्यतां किं करणीयमिति। न्यायाधीशः आरक्षिणम् अभियुक्तं च तं शवं न्यायालये आनेतुमादिष्टवान्।

आदेशं प्राप्य उभौ प्राचलताम्। तत्रोपेत्य काष्ठपटले निहितं पटाच्छादितं देहं स्कन्धेन वहन्तौ न्यायाधिकरणं प्रति प्रस्थितौ। आरक्षी सुपुष्टदेह आसीत्, अभियुक्तश्च अतीव कृशकायः। भारवतः शवस्य स्कन्धेन वहनं तत्कृते दुष्करम् आसीत्। स भारवेदनया क्रन्दति स्म। तस्य क्रन्दनं निशम्य मुदित आरक्षी तमुवाच-‘रे दुष्ट! तस्मिन् दिने त्वयाऽहं चोरिताया मञ्जूषाया ग्रहणाद् वारितः। इदानीं निजकृत्यस्य फलं भुङ्क्ष्व। अस्मिन् चौर्याभियोगे त्वं वर्षत्रयस्य कारादण्डं लप्स्यसे’ इति प्रोच्य उच्चैः अहसत्। यथाकथञ्चिद् उभौ शवमानीय एकस्मिन् चत्वरे स्थापितवन्तौ।

न्यायाधीशेन पुनस्तौ घटनायाः विषये वक्तुमादिष्टौ। आरक्षिणि निजपक्षं प्रस्तुतवति



आश्चर्यमघटत् स शवः प्रावारकमपसार्य न्यायाधीशमभिवाद्य निवेदितवान्- मान्यवर! एतेन आरक्षिणा अध्वनि यदुक्तं तद् वर्णयामि ‘त्वयाऽहं चोरितायाः मञ्जूषायाः

ग्रहणाद् वारितः, अतः निजकृत्यस्य फलं भुङ्क्व। अस्मिन् चौर्याभियोगे त्वं वर्षत्रयस्य कारादण्डं लप्स्यसे' इति।

न्यायाधीशः आरक्षिणे कारादण्डमादिश्य तं जनं ससम्मानं मुक्तवान्।

अतएवोच्यते - दुष्करायपि कर्माणि मतिवैभवशालिनः।

नीतिं युक्तिं समालम्ब्य लीलयैव प्रकुर्वते॥

### शब्दार्थः

|               |                             |                            |
|---------------|-----------------------------|----------------------------|
| भूरि          | - पर्याप्तम्                | - अत्यधिक                  |
| उपार्जितवान्  | - अर्जितवान्                | - कमाया                    |
| निवसन्        | - वासं कुर्वन्              | - रहते हुए                 |
| प्रसृते       | - विस्तृते                  | - फैलने पर                 |
| विजने प्रदेशे | - एकान्तप्रदेशे             | - एकान्त प्रदेश में        |
| शुभावहा       | - कल्याणप्रदा               | - कल्याणकारी               |
| गृही          | - गृहस्वामी                 | - गृहस्थ                   |
| दैवगतिः       | - भाग्यस्थितिः              | - भाग्य की लीला            |
| पलायितः       | - वेगेन निर्गतः/पलायनमकरोत् | - भाग गया, चला गया         |
| प्रबुद्धः     | - जागृतः                    | - जागा हुआ                 |
| त्वरितम्      | - शीघ्रम्                   | - शीघ्रगामी                |
| प्रस्थितः     | - गतः                       | - चला गया                  |
| अर्थकार्श्येन | - धनस्य अभावेन              | - धनाभाव के कारण           |
| पदातिरेव      | - पादाभ्याम् एव             | - पैदल ही                  |
| पुंसः         | - पुरुषस्य                  | - मनुष्य का                |
| निहिताम्      | - स्थापिताम्                | - रखी हुई                  |
| अन्वधावत्     | - अन्वगच्छत्                | - पीछे-पीछे गया            |
| क्रोशितुम्    | - चीत्कर्तुम्               | - जोर जोर से कहने/चिल्लाने |

|                   |                           |                               |
|-------------------|---------------------------|-------------------------------|
| तारस्वरेण         | - उच्चस्वरेण              | - ऊँची आवाज में               |
| अभर्त्सयन्        | - भर्त्सनाम् अकुर्वन्     | - भला-बुरा कहा                |
| प्रख्याप्य        | - स्थाप्य                 | - स्थापित करके                |
| चौर्याभियोगे      | - चौरकर्मणि चौर्यदोषारोपे | - चोरी के आरोप में            |
| नीतवान्           | - अनयत्                   | - ले गया                      |
| अवगत्य            | - ज्ञात्वा                | - जानकर                       |
| दोषभाजनम्         | - दोषपात्रम्              | - दोषी                        |
| उपस्थातुम्        | - उपस्थापयितुम्           | - उपस्थित होने के लिए         |
| आरक्षणम्          | - सैनिकम् (रक्षक पुरुष)   | - सैनिक                       |
| आदिष्टवान्        | - आज्ञां दत्तवान्         | - आज्ञा दी                    |
| स्थापितवन्तौ      | - स्थापनां कृतवन्तौ       | - स्थापना करके                |
| तत्रत्यः          | - तत्र भवः                | - वहाँ का                     |
| न्यवेदयत्         | - प्रार्थयत्              | - प्रार्थना की                |
| क्रोशद्वयान्तराले | - द्वयोः क्रोशयोः मध्ये   | - दो कोस के मध्य              |
| आदिश्यताम्        | - आदेशं दीयताम्           | - आज्ञा दीजिए                 |
| उपेत्य            | - समीपं गत्वा             | - पास जाकर                    |
| काष्ठपटले         | - काष्ठस्य पटले           | - लकड़ी के तख्ते पर           |
| निहितम्           | - स्थापितम्               | - रखा गया                     |
| पटाच्छादितम्      | - वस्त्रेणावृतम्          | - कपड़े से ढका हुआ            |
| वहन्तौ            | - धारयन्तौ                | - धारण करते हुए, वहन करते हुए |
| कृशकायः           | - दुर्बलं शरीरम्          | - कमजोर शरीरवाला              |
| भारवतः            | - भारवाहिनः               | - भारवाही                     |
| भारवेदनया         | - भारपीडया                | - भार की पीड़ा से             |
| क्रन्दनम्         | - रोदनम्                  | - रोने को                     |

|            |   |                   |   |               |
|------------|---|-------------------|---|---------------|
| निशाम्य    | - | श्रुत्वा          | - | सुन करके      |
| मुदितः     | - | प्रसन्नः          | - | प्रसन्न       |
| भुङ्क्ष्व  | - | अनुभवतु           | - | अनुभव करो     |
| चत्वरे     | - | चतुर्मुखे/चतुस्थे | - | चौराहे पर     |
| लप्स्यसे   | - | प्राप्स्यसे       | - | प्राप्त करोगे |
| प्रावारकम् | - | उत्तरीयवस्त्रम्   | - | लबादा         |
| अपसार्य    | - | अपवार्य           | - | दूर करके      |
| अभिवाद्य   | - | अभिवादनं कृत्वा   | - | अभिवादन करके  |
| अध्वनि     | - | मार्गे            | - | रास्ते में    |
| यदुक्तम्   | - | यत् कथितम्        | - | जो कहा गया    |
| वारितः     | - | निवारितः          | - | रोका गया      |
| मुक्तवान्  | - | अत्यजत्           | - | छोड़ दिया     |
| समालम्ब्य  | - | आश्रयं गृहीत्वा   | - | सहारा लेकर    |
| लीलयैव     | - | कौतुकेन (सुगमतया) | - | खेल-खेल में   |
| आदिश्य     | - | आदेशं दत्वा       | - | आदेश देकर     |

### अभ्यासः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-

- (क) निर्धनः जनः कथं वित्तम् उपार्जितवान्?
- (ख) जनः किमर्थं पदातिः गच्छति?
- (ग) प्रसृते निशान्धकारे स किम् अचिन्तयत्?
- (घ) वस्तुतः चौरः कः आसीत्?
- (ङ) जनस्य क्रन्दनं निशाम्य आरक्षी किमुक्तवान्?
- (च) मतिवैभवशालिनः दुष्कराणि कार्याणि कथं साधयन्ति?

## 2. रेखाङ्कितपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

- (क) पुत्रं द्रुष्टुं सः प्रस्थितः।  
 (ख) करुणापरो गृही तस्मै आश्रयं प्रायच्छत्।  
 (ग) चौरस्य पादध्वनिना अतिथिः प्रबुद्धः।  
 (घ) न्यायाधीशः बंकिमचन्द्रः आसीत्।  
 (ङ) स भारवेदनया क्रन्दति स्म।  
 (च) उभौ शवं चत्वरे स्थापितवन्तौ।

## 3. सन्धि/सन्धिविच्छेदं च कुरुत-

- (क) पदातिरेव - ..... + .....  
 (ख) निशान्धकारे - ..... + .....  
 (ग) अभि + आगतम् - .....  
 (घ) भोजन + अन्ते - .....  
 (ङ) चौरोऽयम् - ..... + .....  
 (च) गृह + अभ्यन्तरे - .....  
 (छ) लीलयैव - ..... + .....  
 (ज) यदुक्तम् - ..... + .....  
 (झ) प्रबुद्धः + अतिथिः - .....

## 4. अधोलिखितानि पदानि भिन्न-भिन्नप्रत्ययान्तानि सन्ति। तानि पृथक् कृत्वा निर्दिष्टानां प्रत्ययानामधः लिखत-

परिश्रम्य, उपार्जितवान्, दापयितुम्, प्रस्थितः, द्रष्टुम्, विहाय, पृष्टवान्, प्रविष्टः, आदाय, क्रोशितुम्, नियुक्तः, नीतवान्, निर्णेतुम्, आदिष्टवान्, समागत्य, निशम्य, प्रोच्य, अपसार्य।

| ल्यप् | क्त   | क्तवतु | तुमुन् |
|-------|-------|--------|--------|
| ..... | ..... | .....  | .....  |
| ..... | ..... | .....  | .....  |
| ..... | ..... | .....  | .....  |

## 5. भिन्नप्रकृतिकं पदं चिनुत-

- (क) विचित्रा, शुभावहा, शङ्कया, मञ्जूषा
- (ख) कश्चन, किञ्चित्, त्वरितं, यदुक्तम्
- (ग) पुत्रः, तनयः, व्याकुल, तनूजः
- (घ) करुणापरः, अतिथिपरायणः, प्रबुद्धः, जनः

## 6. (क) 'निकषा' 'प्रति' इत्यनयोः शब्दयोः योगे द्वितीया-विभक्तिः भवति। उदाहरणमनुसृत्य द्वितीया-विभक्तेः प्रयोगं कृत्वा रिक्तस्थानपूर्तिं कुरुत-

यथा- राजमार्गं निकषा मृतशरीरं वर्तते।

- (क) ..... निकषा नदी वहति (ग्राम)।
- (ख) ..... निकषा औषधालयं वर्तते। (नगर)
- (ग) तौ ..... प्रति प्रस्थितौ। (न्यायाधिकारिन्)
- (घ) मोहनः ..... प्रति गच्छति। (गृह)

## (ख) कोष्ठकेषु दत्तेषु पदेषु यथानिर्दिष्टां विभक्तिं प्रयुज्य रिक्तस्थानानि पूरयत-

- (क) सः ..... निष्क्रम्य बहिरगच्छत्। (गृह शब्दे पंचमी)
- (ख) चौरशंकया अतिथिः ..... अन्वधावत्। (चौरशब्दे द्वितीया)
- (ग) गृहस्थः ..... आश्रयं प्रायच्छत्। (अतिथि शब्दे चतुर्थी)
- (घ) तौ ..... प्रति प्रस्थितौ। (न्यायाधीश शब्दे द्वितीया)

## 7. अधोलिखितानि वाक्यानि बहुवचने परिवर्तयत-

- (क) स बसयानं विहाय पदातिरेव गन्तुं निश्चयं कृतवान्।
- (ख) चौरः ग्रामे नियुक्तः राजपुरुषः आसीत्।
- (ग) कश्चन चौरः गृहाभ्यन्तरं प्रविष्टः।
- (घ) अन्येद्युः तौ न्यायालये स्व-स्व-पक्षं स्थापितवन्तौ।

### योग्यताविस्तारः

#### (क) विचित्रः साक्षी

न्यायो भवति प्रमाणाधीनः। प्रमाणं विना न्यायं कर्तुं न कोऽपि क्षमः सर्वत्र। न्यायालयेऽपि न्यायाधीशाः यस्मिन् कस्मिन्नपि विषये प्रमाणाभावे न समर्थाः भवन्ति। अतएव, अस्मिन् पाठे चौर्याभियोगे न्यायाधीशः प्रथमतः साक्ष्यं (प्रमाणम्) विना निर्णेतुं नाशक्नोत्। अपरेद्युः यदा स शवः न्यायाधीशं सर्वं निवेदितवान् सप्रमाणं तदा सः आरक्षिणे कारादण्डमादिश्य तं जनं ससम्मानं मुक्तवान्। अस्य पाठस्य अयमेव सन्देशः।

#### (ख) मतिवैभवशालिनः

बुद्धिसम्पत्ति सम्पन्नाः। ये विद्वांसः बुद्धिस्वरूपविभवयुक्ताः ते मतिवैभवशालिनः भवन्ति। ते एव बुद्धिचातुर्यबलेन असम्भवकार्याणि अपि सरलतया कुर्वन्ति।

#### (ग) स शवः

न्यायाधीश बंकिमचन्द्रमहोदयैः अत्र प्रमाणस्य अभावे किमपि प्रच्छन्नः जनः साक्ष्यं प्राप्तुं नियुक्तः जातः। यद् घटितमासीत् सः सर्वं सत्यं ज्ञात्वा साक्ष्यं प्रस्तुतवान्। पाठेऽस्मिन् शवः एव 'विचित्रः साक्षी' स्यात्।

### भाषिकविस्तारः

उपार्जितवान् - उप + √ अर्ज् + ल्युट्, युच् वा

दापयितुम् - √दा + णिच् + तुमुन्

अदस् (यह) पुँल्लिङ्ग सर्वनाम शब्द

| विभक्तिः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|----------|---------|-----------|----------|
| प्रथमा   | असौ     | अमू       | अमी      |
| द्वितीया | अमुम्   | अमू       | अमून्    |



|         |           |           |         |
|---------|-----------|-----------|---------|
| तृतीया  | अमुना     | अमूभ्याम् | अमीभिः  |
| चतुर्थी | अमुष्मै   | अमूभ्याम् | अमीभ्यः |
| पंचमी   | अमुष्मात् | अमूभ्याम् | अमीभ्यः |
| षष्ठी   | अमुष्य    | अमुयोः    | अमीषाम् |
| सप्तमी  | अमुष्मिन् | अमुयोः    | अमीषु   |

अध्वन् ( मार्ग ) नकारान्त पुँल्लिङ्ग

| विभक्तिः | एकवचनम्    | द्विवचनम्   | बहुवचनम्   |
|----------|------------|-------------|------------|
| प्रथमा   | अध्वा      | अध्वानौ     | अध्वानः    |
| द्वितीया | अध्वानम्   | अध्वानौ     | अध्वनः     |
| तृतीया   | अध्वना     | अध्वभ्याम्  | अध्वभिः    |
| चतुर्थी  | अध्वने     | अध्वभ्याम्  | अध्वभ्यः   |
| पंचमी    | अध्वनः     | अध्वभ्याम्  | अध्वभ्यः   |
| षष्ठी    | अध्वनः     | अध्वनोः     | अध्वनाम्   |
| सप्तमी   | अध्वनि     | अध्वनोः     | अध्वसु     |
| सम्बोधन  | हे अध्वन्! | हे अध्वानौ! | हे अध्वनः! |

